

-6-	-६-
Desire Is Not Love	इच्छा प्रेम नहीं होती
Desire is not love; desire leads to pleasure; desire is pleasure. We are not denying desire. It would be utterly stupid to say that we must live without desire, for that is impossible. Man has tried that. People have denied themselves every kind of pleasure, disciplined themselves, tortured themselves, and yet desire has persisted, creating conflict, and all the brutalizing effects of that conflict. We are not advocating desirelessness, but we must understand the whole phenomena of desire, pleasure, and pain, and if we can go beyond, there is a bliss and ecstasy which is love.	इच्छा प्रेम नहीं होती, वह तो सुख-विलास की ओर ले जाती है। इच्छा सुख-विलास ही होती है। हम इच्छा को गलत नहीं ठहरा रहे हैं। यह कहना तो एकदम मूर्खतापूर्ण होगा कि हमें इच्छारहित होकर जीना चाहिए, क्योंकि यह असंभव है। मनुष्य ऐसा प्रयास कर चुका है। लोगों ने हर प्रकार के विषय-सुख को नकारा है, स्वयं को अनुशासित किया है, स्वयं को उत्पीड़ित किया है, परंतु इच्छा तब भी बनी रही है, द्वंद्व पैदा करती रही है। और इस द्वंद्व के तमाम पाशविक परिणामों को पनपाती रही है। हम इच्छारहितता की वकालत नहीं कर रहे हैं, परंतु हमें इच्छा, मनोसुख और पीड़ा के संपूर्ण प्रपंच को समझना चाहिए। और, यदि हम इसके पार जा सकें तो जानेंगे आनंद, परम उल्लास--अर्थात् प्रेम।
CHAPTER THREE	अध्याय तीन
Family and Society: Relationship or Exclusion?	परिवार और समाज : रिश्ता या अलगाव
-1-	-१-
Family and Society	परिवार और समाज
The family is against society; the family is against human relationship as a whole. You know, it is like living in one part of a big house, in one little room, and making an extraordinary thing of that one little room, which is the family. The family has only importance in relation to	परिवार समाज-विरुद्ध होता है, परिवार कुल मिलाकर मानव-संबंधों के विरुद्ध होता है। देखिए, यह एक विशाल भवन के एक हिस्से में एक कक्ष में रहने जैसा है--इसी को परिवार कहते हैं। परिवार का एकमेव महत्त्व उस संपूर्ण भवन के साथ संबंध से है। उस एक कक्ष का जो संबंध उस पूरे भवन से है, वही संबंध



<p>the whole of the house. As that one room is in relation to the whole of the house, so is the family in relation to the whole of human existence. But we separate it; we cling to it. We make much about the family—my relations and your relations—and we battle with each other everlastingly. And the family is like the little room in relation to the whole house. When we forget the whole house, then the little room becomes terribly important; so also the family becomes very important when you forget the whole of human existence. The family has only importance in relation to the whole of human existence; otherwise, it becomes a dreadful thing, a monstrous thing...</p>	<p>परिवार का संपूर्ण —मानव जाति से है। परंतु हम इससे पृथक भी हैं और जुड़े हुए भी। हम परिवार को बहुत महत्त्व देते हैं—मेरे संबंध और आपके संबंध। परंतु हम आपस में कभी न खत्म होने वाली लड़ाई लड़ते रहते हैं। परिवार उस पूरे भवन में एक कक्ष के समान होता है। जब हमारे लिए उस पूरे भवन का कोई महत्त्व नहीं रहता, तब उस कक्ष का महत्त्व प्रबल रूप से बढ़ जाता है। इसी प्रकार जब आप समूचे मानव-अस्तित्व को भुला बैठते हैं तब परिवार का महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है। परिवार का एकमात्र महत्त्व तो संपूर्ण मानवता के साथ संबंध में है, अन्यथा यह एक विकराल और विकट रूप धारण कर लेता है..</p>
<p>-2-</p>	<p>-२-</p>
<p>Do We Truly Love Our Families?</p>	<p>अपने परिवार को क्या हम वास्तव में प्रेम करते हैं?</p>
<p>And when we say, "We love the family," we do not really love that family; we do not love our children—actually we do not. When you say that you love your children, you really mean that they have become a habit, toys—things of amusement for a while. But, if you love something, your children, then you would care.</p>	<p>जब हम कहते हैं, "मैं अपने परिवार को प्रेम करता हूँ," तो वस्तुतः हम अपने परिवार को प्रेम नहीं करते, अपने बच्चों को प्रेम नहीं करते—सचमुच हम प्रेम नहीं करते। जब आप कहते हैं कि आप अपने बच्चों को प्रेम करते हैं तब आपका अर्थ वास्तव में होता है कि वे आपकी आदत बन गये हैं, वे खिलौने हैं आपके—कुछ समय के लिये आपके मनोरंजन का साधन। क्योंकि आपका किसी से भी, अपने बच्चों से यदि सचमुच प्रेम होता तो आप उनका ध्यान रखते।</p>
<p>You know what caring is? If you care, when you plant a tree, you care for it; you cherish it; you nourish it.. You have to dig deep before you plant, then see the soil is right, then plant, then protect it, then watch it every day, look after it as if it were a part of your whole being. But you do not love the children that way. If you did, then you would have a different kind of education altogether. There would be no wars, there would be no poverty. The mind then would not be</p>	<p>क्या आप जानते हैं कि यह ध्यान रखना क्या होता है? जब आप कोई पौधा लगाते हैं, तब आप उसका ध्यान रखते हैं, उसकी देखभाल करते हैं, उसका पोषण करते हैं.. उसे लगाने से पहले आप गहरा गड्ढा खोदते हैं, आपको देखना पड़ता है कि मिट्टी सही है या नहीं, तब आप वहां उस पौधे को लगाते हैं, फिर उसका संरक्षण करते हैं, उसकी प्रतिदिन निगरानी करते हैं, उसकी देखभाल ऐसे करते हैं जैसे वह आपके अस्तित्व का एक अंश हो। परंतु, आप अपने बच्चों को इस प्रकार का प्रेम नहीं</p>

<p>trained to be merely technical. There would be no competition, there would be no nationality. And because we do not love, all this has been allowed to grow.</p>	<p>करते। यदि करते तो आपकी शिक्षा बिल्कुल भिन्न प्रकार की होती। न कोई युद्ध होता, न गरीबी होती। तब दिमाग को केवल तकनीकी बनाकर नहीं छोड़ दिया जाता। तब न तो कोई प्रतिस्पर्धा होती, न कोई राष्ट्रीयता। और चूंकि हम प्रेम नहीं करते, अतः इन तमाम चीजों को बढ़ने दिया करते हैं।</p>
<p>-3-</p>	<p>-३-</p>
<p>Depending Makes You Incapable</p>	<p>निर्भरता आप में असमर्थता भर देती है</p>
<p>When you say you love somebody, don't you depend on him? It is all right when you are young to be dependent on your father, on your mother, on your teacher, or on your guardian. Because you are young, you need to be looked after, you need clothes, you need shelter, you need security. While you are young, you need a sense of being held together, of somebody looking after you. But even as you grow older, this feeling of dependence remains, does it not? Have you not noticed it in older people, in your parents and your teachers? Have you not noticed how they depend on their wives, on their children, on their mothers? People when they grow up still want to hold on to somebody, still feel that they need to be dependent. Without looking to somebody, without being guided by somebody, without a feeling of comfort and security in somebody, they feel lonely, do they not? They feel lost. So, this dependency on another is called love, but if you watch it more closely, you will see dependency is fear; it is not love. Because they are afraid to be alone, because they are afraid to think things out for themselves, because they are afraid to feel, to watch, to find out the whole meaning of life, they feel they love God. So they depend on what they call God, but a thing created by the mind is not dependable; it is not God, the unknown. It is the same with an ideal or a belief. I believe in something, and that gives me great comfort...</p>	<p>जब आप कहते हैं कि आप अमुक को प्रेम करते हैं तब क्या आप उस पर निर्भर नहीं हो जाते। जब आप छोटे होते हैं तब अपने माता-पिता पर, अपने अभिभावक पर, अपने शिक्षक पर निर्भर रहना तो समीचीन है। चूंकि आप छोटे हैं, आपको देखभाल की आवश्यकता होती है, आपको वस्त्र चाहिए, आसरा चाहिए, सुरक्षा चाहिए। छुटपन में आपको सहारे की, किसी के द्वारा आपकी देखभाल किये जाने की भावना की आवश्यकता होती है। परंतु जब आप बड़े हो जाते हैं, तब भी निर्भरता की यह भावना आप में बनी ही रहती है, है न? क्या आपने यही भावना वयस्क लोगों में, अपने अभिभावकों और अध्यापकों में महसूस नहीं की है? क्या आपने नहीं देखा है कि वे किस कदर अपनी पत्नी, अपने बच्चों, अपनी माताओं पर निर्भर रहते हैं। लोग जब बड़े हो जाते हैं, तब भी वे किसी के साथ लगे रहना चाहते हैं, तब भी वे यह महसूस करते हैं कि उन्हें निर्भर रहने की आवश्यकता है। किसी पर आश्रित रहे बिना, किसी के मार्गदर्शन बिना, किसी न किसी में सुख व सुरक्षा महसूस किये बिना वे स्वयं को अकेला अनुभव करते हैं, वे स्वयं को खोया-खोया महसूस करते हैं। और, दूसरे पर इस निर्भरता को प्रेम कह दिया जाता है, परंतु यदि आप बहुत ध्यानपूर्वक देखें तो पाएंगे कि यह निर्भरता तो भय है, प्रेम नहीं है। चूंकि वे अकेला होने से घबराते हैं, किसी भी विषय में अपनी सोच रखने से घबराते हैं, चूंकि वे जीवन को महसूस करने, उसे ध्यानपूर्वक देखने और उसका समग्र अर्थ जानने से घबराते हैं, अतः उन्हें लगने लगता है कि वे ईश्वर से प्रेम करते हैं। इसलिये वे जिसे ईश्वर मानते हैं उस पर निर्भर हो जाते</p>

	हैं। परंतु, मन द्वारा रचित कुछ भी भरोसेमंद नहीं हो सकता, वह ईश्वर नहीं हो सकता, अज्ञात नहीं हो सकता। यही बात किसी आदर्श अथवा विश्वास पर भी लागू होती है। मैं किसी बात पर विश्वास करता हूँ, इसीलिए उससे मुझे बड़ा सुख-चैन मिलता है...
It is right that you should do so when you are young, but if you keep on depending when you have grown to maturity, that will make you incapable of thinking, of being free. Where there is dependence there is fear, and where there is fear there is authority; there is no love...	यह सब तब तक तो समीचीन है जब तक आप छोटे हैं, परंतु बड़े होने पर भी यदि आप निर्भर रहना जारी रखते हैं, तो यह व्यवहार आपको ठीक से सोचने व स्वतंत्र होने नहीं देगा, उसमें असमर्थ बना देगा। जहां निर्भरता रहती है वहां भय भी रहता है, और जहां भय रहता है वहां प्रभुता ही होती है, प्रेम नहीं होता...
-4-	-४-
It Is Natural to Have a Family: To Hide There Is Catastrophe	परिवार का होना स्वाभाविक है, उसमें सुरक्षा चाहना अनर्थ है
The family as it is now is a unit of limited relationship, self-enclosing and exclusive.. We must understand the desire for inward, psychological security and not merely replace one pattern of security with another.	परिवार अब जिस रूप में आ गया है वह सीमित संबंधों वाली अपने खोल में बंद और एक अलग-थलग इकाई बन गया है... हमें आंतरिक व मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की इच्छा को समझना होगा, सुरक्षा के एक ढर्रे को छोड़ दूसरे को अपना लेने भर से बात नहीं बनेगी।
So the problem is not the family, but the desire to be secure. Is not the desire for security, at any level, exclusive? This spirit of exclusiveness shows itself as the family, as property, as the State, the religion, and so on. Does not this desire for inward security build up outward forms of security which are always exclusive? The very desire to be secure destroys security. Exclusion, separation, must inevitably bring about disintegration; nationalism, class-antagonism, and war, are its symptoms. The family as a means of inward security is a source of disorder and social catastrophe.	तो समस्या परिवार नहीं है, समस्या है सुरक्षा की चाहना। किसी भी स्तर पर सुरक्षा की चाहत क्या अपने को विशिष्ट और अलग मानने से संबंधित नहीं होती। विशिष्टता का यह भाव स्वयं को परिवार, संपत्ति, राज्य, धर्म आदि-आदि स्वरूपों में प्रकट करता है। भीतरी सुरक्षा की यह चाहत क्या बाहरी सुरक्षा निर्मित कर एक लक्ष्मण रेखा नहीं खींच लेती जो सदैव अलगावकारी होती है? सुरक्षा की चाहत ही सुरक्षा को ध्वस्त कर देती है। विशिष्टता, विभाजकता अपरिहार्य तौर पर विखंडनकारी होती है। राष्ट्रवाद, वर्ग-प्रतिद्वंद्विता और युद्ध इसके प्रतीक रहे हैं। आंतरिक सुरक्षा के माध्यम के रूप में परिवार अव्यवस्था का, अनर्थ का स्रोत है।
-5-	-५-

